RNI DELPRA / 2015 / 59918 ISSN 24545252 णमो जिणाणं Year 7 Vol.13 Jan-June 2021 Page 1

# पागद – भासा PÃGADA BHÃSA

प्राकृत भाषा पाउअ-भासा पाइय-भासा PRAKRIT LANGUAGE

The First News Magazine In Ancient Prakrit Language Hon.Editor Prof. Dr Anekant Kumar Jain

## अंतारट्ठिय-ऑण-लाइण-पागद-डिप्लोमा-पाठसाला

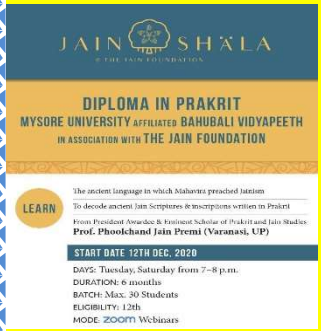


जइण फाउंडेसण ,बइंगलुरु तहा बाहुबली विज्जापीठ-सवणबेलगोला-मज्झमेण करोणा-लॉक-डाउण-कालम्मि अंतारट्ठिय ऑण-लाइण-पागद- डिप्लोमा-पाठसाला ज़ूम-चेलणेण चलइ | जइण फाउंडेसणस्स संठावगो रमेस-के.पी.-साहस्स पयासेण सुपसिद्ध-विउसो आयरिय-फूलचंद-जइणो पेम्मी,वाराणसी अज्झावणकज्जं कुणइ | पाठसालम्मि देस-वियेसाणं बहुसिस्सा सुट्ठु-अज्झयणं कुव्वंति | अणेग-साहु-सव्वि वि सुट्ठु-अज्झयणं कुव्वंति | छहमासस्स पागद-डिप्लोमा-पाठकमस्स डिजिटल-कक्खाअ संचालणं जुवा विउसो सिरी णील-साह ,मुंबई कीरइ |- Dr Arihant Kumar Jain, JVBI ,Ladnun

8.2.2021
अमर उजाला
गौरव लौटाने की पहल : काशी से बांट रहे प्राकृत भाषा का ज्ञान
खास खबर
ऑनलाइन कक्षा में देश के सभी प्रांतों से जुड़ रहे प्रशिक्षु
अभिनंदन की मां भी सीख रही हैं प्राकृत
हिंदी का प्राकृत से हुआ जन्म
माध्यमिक स्तर पर लागू करने से बढ़ेंगे रोजगार के अवसर
प्रमुख शैव
प्रमुख विद्वान

## पागद-भासा-सद्धांयलि ॐ अर्हम्

दिवंगय-सुगइगमणं,परियणाणं य होदु धम्मसरणं ।
अणिच्चसंसारे खलु , भावदु वत्थुसरुवं णिच्चं ।।

### पागद-भासा-संरक्खओ सिरि-णिम्मल-सेठी दिवंगओ

अहिल-भारदवस्सीय-दिअम्बर-जइण-महासभा-अज्झक्खो पागद-भासा-संरक्खओ सिरि-णिम्मल-सेठी २७ अप्पइल २०२१ दिवसम्मि दिवंगओ | सो जइण पुरातच्चे,तित्थ-संरक्खणे,सिक्खा-खेत्ते बहु कज्जं किदं | सद्धांयलि |-

Editor

## पागद-विउसो आयरिय-जिणेंदो-"बेस्ट-प्रोफेसर"

२६जणवरी२०२१ ,गणतंतदिवसम्मि मोहणलाल सुखाड़िया विस्सविज्जालयो ,उययपुरस्स जइणविज्जा-पागद-विहागस्स अज्झक्खो आयरिय जिणेंद-जइणो "बेस्ट-प्रोफेसर" इइ सम्माणेण अलंकियो होहि | पागद-भासा-पक्खदो सुहकामणा |

- Editor

## || Editorial ||

# तित्थयर-महावीर-जम्मोस्सवो

**(पागद-अट्ठगं )**

**णमो महावीरस्स**

**पुप्फोतराभिहाणा तिसिलागब्भासाढसिदछट्ठम्मि ।**
**अवइण्णमहावीरो तित्थयरो य जइणधम्मस्स ।।1।।**

स्वर्ग के पुष्पोत्तर विमान से च्युत होकर आषाढ़ माह के शुक्ल पक्ष की षष्ठी के दिन माता त्रिशला के गर्भ में जैन धर्म के अंतिम तीर्थंकर भगवान् महावीर अवतरित हुए ।

**तत्थ अट्ठदिवसाहिय णवमासपुण्णकरिदूण विदेहे ।**
**वेसालीकुण्डउरे णाहसिद्धत्थनंदवत्ते ।। 2 ।।**
**भगवं सुजम्मइसाए णवणवइपंचसयवस्सपुव्वम्मि ।**
**चेत्तसिदतेरसीए सुहे उत्तरफग्गुणिरिक्खे ।।3।।**

गर्भ में नौमाह आठ दिन पूर्ण करके भारत वर्ष के विदेह देश के वैशाली कुंडनगर में नाथ वंशी राजा सिद्धार्थ के नान्द्यावर्त नामक महल में ईसा के पांच सौ निन्यानबे (५९९)वर्ष पूर्व चैत्र शुक्ल त्रियोदशी के दिन शुभ उत्तर फाल्गुनी नक्षत्र में भगवान् महावीर का शुभ जन्म हुआ।

**दट्ठूण सिंहचिण्हं वीरदाहिणपायंगुट्ठणहम्मि ।**
**होहिइ खलु तित्थयरो णायगवरमोक्खमग्गस्स ।। 4।।**

उस दिव्य बालक वीर के दाहिने पैर के अंगूठे के नाखून पर सिंह का चिन्ह देख कर (यह भविष्यवाणी कर दी गयी थी कि)निश्चित ही ( यह बालक धर्म तीर्थ का कर्त्ता )तीर्थंकर और मोक्षमार्ग का श्रेष्ठ नेता होगा ।

**सिंहवीरचिण्हमत्थि,तत्तो च तित्थयरमहावीरस्स ।**
**वेसालिथम्भस्स खलु पडीयभारयसरयारस्स ।।5।।**

तब से ही सिंह निश्चित ही तीर्थंकर महावीर का और वीरता का चिन्ह है तथा आज वैशाली का सिंह स्तम्भ तथा भारत सरकार का प्रतीक है ।

**पढमे खलु गणतंते वेसालीए होही जस्स जम्मं ।**
**धम्मदंसणे ठवीअ वि गणतंतं य महावीरो ।।6।।**

निश्चय ही विश्व के प्रथम गणतंत्र वैशाली में जिनका जन्म हुआ और उन भगवान् महावीर ने धर्म दर्शन के क्षेत्र में भी गणतंत्र की स्थापना की ।

**अप्पा सो परमप्पा णत्थि कोवि एगो इस्सवरो लोए ।**
**णत्थि कोवि कत्ता खलु लोअस्स य केवलं णाया ।।7।।**

उन्होंने कहा कि प्रत्येक आत्मा परमात्मा है ,लोक में कोई एक ईश्वर नहीं है ,निश्चित ही इस लोक का कोई भी कर्त्ता नहीं है और वह परमात्मा केवल ज्ञाता (दृष्टा) है ।

**जीवसयमेव कत्ता,सुहदुक्खाणं य सयं कम्माणं ।**
**सव्वकम्मणस्सिदूण, भत्तो वि य भगवन्तो हवइ ।।8।।**

(उन्होंने समझाया कि) अपने सुख-दुखों का और अपने कर्मों का जीव स्वयमेव कर्त्ता है, अपने सभी कर्मों का नाश करके भक्त भी भगवान् हो जाता है ।

**Prof.Dr Anekant Kumar Jain**
**(Awarded by President Of India)**
**Deptt of Jain Philosophy**
**Shri Lalbahadur National Sanskrit University ,New Delhi**



**पागद-भासाअ पगासगो डॉ.रुइ-जइणं सोह-उवाहि**

Dr Ruchi Jain

**तित्थयर-महावीर-विस्सविज्जालयस्स जइण-अज्झयण-केन्दं पागद-भासा-पगासगो डॉ.रुइ जइणं 'जैन परंपरा में योग विज्ञान' इइ विसयोवरि सोह-उवाहि पदत्तं । सुहकामणा ।**

*With Best compliments and blessings from*

*Shri Abhay Kumar Jain- Smt Kusum Jain,Baruasagar ,Jhansi*

*Dr Amit Jain - Smt Aashi Jain, Gwalior*

*Dr Hamendra Jain - Smt Nidhi Jain , Vidisha*

# तित्थयरो महावीरो

जिणसासणे चउवीस-तित्थयरा संति । आदि बंभा सिरि रिसहदेवो पढमो तित्थयरो अत्थि । तं णंतरं तेवीस तित्थयरा जादं,पच्छा महावीरो भगवदो अंतिम तित्थयरो अत्थि । भगवदो महावीरस्स जम्मो चेत्तमासस्स तेरसतिहीए ईसापुव्व पंचसद णिण्णाणवे(५९९) सुह मंगलदिवसे वडढमाण महावीरस्स जम्म महुच्छवं जम्माहिसेगं च जादं । जंबूदीवे भरहखेत्ते भारहदेसे कुंडउर णयरे परक्कमी-धम्मपरायणो,आदिसूरो महाराया सिद्धत्थो सव्वगुण पुण्णा तिसला महाराणी जुत्तेण रायं कुव्वहिंति । तेसिं पुण्णवंतजुयलेण वड्ढमाणमहावीरस्स जम्मं जादं।

भगवदो महावीरस्स जम्मकल्लाणं वट्टमाणकाले सव्वजइण समायो अईव उल्लासेण मणाएंति।भगवं महावीरस्स उवएसो जणाणं हियकारी होंति। पुराकालम्मि वि सव्वे जणा पागद-भासाए बोल्लिअ । अदो सा भासा जणभासा रूवेण पसिद्धो अत्थि । पागद-भासा साहिच्चस्स अदीवसमिद्ध परंवरा अत्थि । अद्धमागहीए तहा अ सोरसेणी पागद भासाए आगमा णिबद्धो अत्थि।आगम तहा तस्स वक्खा,साहिच्चो, भारददेसस्स अमुल्लं णिही अत्थि।

सुरासुर-मणुय-पसु-णरिंदाहिं वंदिदं वीर बालगस्स पंचणाम पसिद्धो जादं । तं जहा वड्ढमाणो,महावीरो,वीरो,सम्मइ,अइवीरो। देव,णर बालगेहिं सह कीडंतेण,तच्चाहिगमेण,सुट्ठुमणो,विणोदेण,तस्स बालत्तणं पुण्णं जादं।

जोव्वत्तणे सो जुवरायो अणिच्चादि अणुवेक्खदि,चिंतरणदो होदि।सो विचिंतेदि जुवराय राय पदे य पदिट्ठदम्हिं किं होज्जइ।सव्वत्थ हिंसा ,अणायारो,असंती,अधम्मो,एगंतवादो संति ।अहं संसारे अहिंसा-संती-धम्माणं पसारो करिस्सामि ।

एकदा मादुपिदु सम्मुहे गंतूण महावीरेण अप्प-पर-कल्लाणत्थं हिंसादिपाव विणासणत्थं णिग्गंथ दिक्खाहेदुं आणा गहीअ,महाघोर तवो चागं च किदं ।बारसवास पज्जतं घोर तवं काऊण तस्स केवल णाणादि अणंतगुणा पत्तं जादं। अहिंसा सच्चे बंभचेर अचोरिय अणेगंतवाय,अपरिग्गहवादादि जणकल्लणकारी सिद्धंताणं उवदेसं दाऊण बाहत्तरी वरिसावसाणे दीवावली-पव्वे पावापुरीए महावीर-भगवदो मोक्खं गदं।

DR SMT RANJNA PATORIA, KATNI (M.P.) , (Student of online Prakrit Diploma Pathshala )

## पाइय -दिक्खंत-सम्मेलणं संपण्णं

१४/०३/२०२१,सवणबेलगोला,कण्णाडगपंते,डा सिरिमई रंजणा पटोरिया जइण सवणबेलगोलाए ठिदेण बाहुबली पाइय विज्जापीढेण पाइय-रयणं सिल्वर-मेडल-पुरक्कारेण सम्माणिदा।इमम्मि अवसरम्मि विज्जाभूसण आयरिय पेम्मसुमण जइण पुरक्कारेण सम्माणिदा ।सम्मेलणस्स सव्व अज्झक्खं पो. ए. सी. विद्याधर जइण संति।जिणागमस्स मूल भासा पाइय भासा अत्थि।तेण पाइय भासाए रक्खणेण जिणागमस्स कायव्या।पाइय भासा साहिच्चो भारददेसस्स अमुल्ल णिही अत्थि। अम्हे पाइय साहिच्चस्स अज्झयणं अवस्समेव कायव्वं।

## भगवं महावीरो

(उम्मुत्त-छंदो)

वत्ती णत्थि वत्तिव्वस्स णामो अत्थि महावीरो
साहओ णत्थि साहणाअ णामो अत्थि महावीरो
कम्मस्स जंजीरेसु ता बंधिए सव्वे
कम्माणि तुट्टमाणस्स णामो अत्थि महावीरो
जिणो, णिग्गन्थो, णायपुत्तो, अहत्तो, चोवीसमो तित्थयरो
संसारियजुद्धाहिन्तो पच्छा हट्टिऊण, अप्पियसंगामो जुज्झियो डट्टिऊण
रज्जं च सम्मज्जं छड्डिउण, जयीअ णियअप्पं
काउसग्गझाणतवसंजमेण, पगडाविअं सिज्झत्तं
भाउतिअयाअ परे(विलगो),मुणीअ अप्पस्स महिमं
दासी साहणाअ सुत्ताइं अम्हे, कलासक्कइ गरिमं
देहरुवत्तो विलगो होसी, परं णाणजोईअ सद्धिं सया
एरिसो मम वीरपहुस्स,जम्मोच्छवं अम्हे मणामो
सद्धबारसवरिसस्स साहणा, तिसयएगूणपचास दिवसस्स आहारं
छट्ठम अट्ठम भत्तं छहमासस्स तवो अभिग्गहाइं पि आसी अणोहाइं काइं वारं
परीसहा अगणियं उवसग्गाण ण अन्तं
कण्णेसु डलिआणि कीलाणि, मिलिआणि चंडकोसियस्स डंकाणि
संगमसूलपाणी वि पराजयं सवीगारिअं
पहुस्स अवियलसाहणाअ, सयं सयं णमो अम्हाणं
करिसा आसी सा समया, केरिसं आसी तं झाणं
पगेसु पचन्ति सालिणो, परं मुहे मुसकाणं
जाणमो अम्हे वि सा साहणा, सवीगारमो अम्हे वि तं अप्पज्झाणं
जीवत्तेण पगडावमो सिवत्तं,एरिसं सिवायरियभगवणस्स अभियाणं
निद्दाविजयो, आहारविजयो, अप्पगुत्तो, परमजिणेंदियो
केरिसं तुज्झ महिमागाणं करमु, सद्दतुच्छं, णत्थि मज्झ सामत्थयं
पहुमहावीरस्स जम्मकल्लाणगअवसरे
दाइ संदेसो, वड्ढमो अम्हे वि सया अप्पपहे
देवभासा अत्थि पाइयं, वीरवाया अत्थि पाइयं
जाणिहिमो पहुवीरस्स सिज्झन्तं, सिक्खिहिमो अम्हे पाइयं

SHRI NISHANT MUNI JI (Sanghasth Dr Acharya Shivmuni Ji ) Student of Online Prakrit Diploma Pathshala

## णववस्साहिणंदणं

पुरिसत्थो अम्मेहिं जो वि कदो वट्टदे अज्ज पज्जंतं ।
तं खलु सव्वं चत्ता धम्ममणुसरदु सयं अप्पणो णिच्चं।।
तदो अवस्सं होहिदि मंगलं धम्मो हि जीवणे सम्मं।
पडिवस्सं पडिदियसं जाण खलु णववस्साहिणंदणं सम्मं ।।

हमारे द्वारा आज तक जो भी पुरुषार्थ किया गया है, उस सबको छोड़कर हमेशा स्वयं आत्मा के धर्म का अनुसरण करो । उससे अवश्य ही जीवन में सम्यक् मंगल धर्म हो जायेगा । प्रतिवर्ष और प्रति दिन उसे ही तुम नववर्ष का सच्चा अभिनंदन जानो ।

- Prof.Shriyansh Singhai,Jaipur

## ऑण लाइण सिक्खा

सिक्खा कीरइ अंधो, डिजिटलो अंधयारो य सव्वत्थ ।
डाऊणलोडो ण होदि, रोट्टगो गुगलत्तो कया ।।

भावार्थ-

सब तरफ डिजिटल अंधकार फैल गया है और ऑनलाइन शिक्षा विद्यार्थियों को अंधा कर रही है ।इन्हें कौन समझाए कि कितना भी कर लो रोटी गूगल से कभी डाउन लोड नहीं होती । - Dr Anekant Kumar Jain

**Declaration As Per Rule**
Printed,Published And Owned By Ruchi Jain And Printed At Sonu Printing Press,Munirka,New Delhi-67 And Published At JIN FOUNDATION,A93/7A,Behind Nanda Hospital,Chattarpur Extension,New Delhi-110074,Editor Dr Anekant Kumar Jain,Email - pagadbhasa001@gmail.com, Contact-9711397716

**Printed Matter Posted Under P&T Guide Sec.114(7)**
**To**

.....
.....
.....

If undelivered please return to
**JIN FOUNDATION,A93/7A,Behind Nanda Hospital,Chattarpur extension,New Delhi-110074**